23 / 01 / 76 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

लास्ट स्टेज का पुरूषार्थ-

सहज न्यारा होने का अनुभव

➢➢ रूहानी न्यारी ड्रिल का अभ्यास करती

➳ _ ➳ मैं ज्योतिर्बिन्दु-स्वरूप आत्मा बैठी हूँ

→ दिव्य-ज्योतिर्बिन्दु-स्वरूप शिव बाबा के पास

◆ ज्योतिर्बिन्दुओं के देश

◆ परमधाम में

◆ लाइट हाउस में

• जहाँ चारों ओर

• लाइट ही लाइट है

➳ _ ➳ मैं दिव्य तेजस्वी सितारा

→ लाइट की किरणों में समाकर

◆ लाइट स्वरुप बन

• चमक रही हूँ

➳ _ ➳ सुख-शांति के सागर में लहराकर

→ मास्टर शांति का सूर्य बन

◆ सुख-शांति की किरणों को

• चारों ओर फैलाते हुए

• कर्मक्षेत्र पर लौट रही हूँ

➢➢ मैं विशेष आत्मा

➳ _ ➳ अपने लाइट स्वरुप की स्मृति में रह

→ लाइट की स्टेज में स्थित होकर

◆ हर कर्म कर रही हूँ

➳ _ ➳ हर कर्म करते हुए

→ विस्तार में आते हुए भी

◆ बहुत ही हल्कापन का

• अनुभव कर रही हूँ

➳ _ ➳ सम्बन्ध-संपर्क में आते

→ रमणीकता में आते भी

◆ सहज ही न्यारापन का

• अनुभव कर रही हूँ

➳ _ ➳ मेरे नयनों के नूर से

→ बाबा के ज्योतिस्वरूप का

◆ साक्षात्कार करा रही हूँ

➳ _ ➳ मेरे नयन सबको

→ लाइट का गोला

◆ दिखाई दे रहे हैं

➳ _ ➳ हर कर्म को

→ कर्मयोग में

◆ परिवर्तित कर

• कर्म के बोझ से

• मुक्त हो रही हूँ

➳ _ ➳ मैं न्यारी-प्यारी आत्मा

→ लास्ट स्टेज के पुरुषार्थ का

→ अभ्यास कर

◆ जैसे कर्म के विस्तार में आती हूँ

◆ वैसे सहज ही न्यारी हो जाती हूँ

• अभी-अभी कर्म-क्षेत्र,

• अभी-अभी परमधाम